

सावन का संदेश

सभी साधकों और प्रचारकों को मेरा नमस्कार ।

परमात्मा की व्यवस्था संसार में सर्वोत्तम है । आज हमें इस व्यवस्था को जानने का मौका मिला । भारतीय संस्कृति में सावन महीने का अलग ही महत्व है । लोग इस महीने में व्रत रखते हैं, उपवास करते हैं और परमेश्वर की आराधना करते हैं । हम ध्यान के माध्यम से परमेश्वर की आराधना करते हैं । परमात्मा ने हमें ध्यान द्वारा आध्यात्मिक उन्नति की नई ऊंचाई पर पहुँचाने का एक मौका दिया है । इसलिए मैंने मेरी यात्रा सावन के पहले दिन से शुरू की । आज, जब मैं सात समुंदर पार यहाँ आया हूँ, तब मैं परमात्मा की व्यवस्था को समझ सका हूँ ।

आज सुबह ध्यान के दौरान मुझे पता चला कि **मेरा सूक्ष्म शरीर एक सुनहरे और विराट आकाश के रूप में पूरी पवित्र भारतभूमि पर छाया हुआ है और उसमे से ठंडा-ठंडा चैतन्य आकाश में बह रहा है** । यह ठीक उसी प्रकार से स्थिर है, जैसे धागे से बंधा हुआ कोई गैस का गुब्बारा आकाश में स्थिर रहता है । और वह सूक्ष्म शरीर मेरे स्थूल शरीर की तुलना में आपसे ज्यादा निकट है, जो कि अभी कॅनेडा में है । इसलिए, आप जब भी ध्यान करते हो, आपका चित पहले मेरे सूक्ष्म शरीर की ओर जाता है । सूक्ष्म शरीर नाशवान नहीं है, यह शाश्वत है । इसलिए, जब आपका चित शाश्वत शरीर पर रहता है, तब आपका चित निश्चित रूप से अत्यंत शक्तिशाली बनता है । इसलिए, अपने चित को मजबूत बनाने के लिए आने वाले तीन महिनों में आपको खूब ध्यान करना चाहिए । **साधक अनुभव करेंगे कि वे ध्यान में ज्यादा एकाग्र हो पा रहे हैं और प्रचारक महसूस करेंगे कि उनका कार्य बहुत तेजी से और बड़ी आसानी से फैल रहा है क्योंकि शक्तियाँ अत्यंत मजबूत होती जा रही हैं** । साधकों को चमत्कारिक शक्तियों का अनुभव होगा । चमत्कार और कुछ नहीं, बस सूक्ष्म शरीर की शक्तियों और समर्पित ध्यान का मेल है । इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाने के लिए प्रत्येक को अपना चित सिर्फ ध्यान पर केंद्रित करने की कोशिश करनी चाहिए । एक बार आपकी चितशक्ति मजबूत हो जाए, बाकि समस्याएँ तो अपने आप छूट जाएँगी ।

आप सभी मजबूत चितशक्ति के मालिक बने, इसी आशीर्वाद के साथ...

बाबा स्वामी